आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1884-1941)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आधुनिक हिन्दी निबन्ध के मूर्धन्य, चिन्तक, समीक्षक, और इतिहासकार माने जाते हैं। उनका जन्म उत्तरप्रदेश के बस्ती जिले के आगौना नामक गाँव में 4 अक्टूबर, 1884 ई. को हुआ था। आपकी प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा मिर्जापुर में हुई। शुक्ल जी मिर्जापुर के स्कूल में ड्राइंग मास्टर के पद पर कार्य किया। बचपन से ही हिन्दी भाषा और साहित्य से लगाव था, इसलिए 1908 ई. काशी विश्वविद्यालय में प्राध्यापक नियुक्त हुए और आजीवन वहीं कार्य करते रहे।

आचार्य शुक्ल बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कविता, अनुवाद तथा निबन्ध के क्षेत्र में अद्‌भुत क्षमता का परिचय दिया। आपके निबन्धों का पहला संग्रह 'विचार-वीथी' नाम से मुद्रित हुआ। बाद में 'चिन्तामणि' नाम से अधिकांश निबन्धों का संग्रह भी प्रकाशित हुआ। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' आपकी सर्वप्रमुख साहित्यिक रचना है। 'जायसी-ग्रन्थावली' और 'भ्रमर गीत सार' आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। अनुवाद के अतिरिक्त आलोचना के नए आयाम आपने प्रदान किए हैं। शुक्लजी के निबन्धों में मौलिकता, अद्‌भुत कल्पनावैभव एवं चिन्तन की अजस्रता सर्वत्र प्रवाहित हुए है। भारतीय और पाश्चात्य काव्य चिन्तकों के समीक्षात्मक विवेचन इनके निबन्धों की मौलिक विशेषताएँ हैं। 'कविता क्या है', 'साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद', 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था', 'रसमीमांसा', 'गोस्वामी तुलसीदास' आदि प्रमुख आलोचनात्मक निबन्ध कृतियाँ भारतीय हिन्दी साहित्य की अमर रचनाएँ हैं। इन निबन्धों में उनका अद्‌भुत आचार्यत्व, पाण्डित्व पूर्ण चिन्तन तथा निबन्ध कौशल का परिचय मिलता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने तुलसीदास के काव्य में लक्षित परम्परा और मौलिकता, काव्य और नीति, आन्तरिकता और सामाजिकता में समन्वय पर विचार किया है। तुलसी उनके सर्वप्रिय कवि हैं। तुलसी के काव्य में रामचरित के कारण जीवन और साहित्य के अनेक तत्वों का सामंजस्य है।

आचार्य शुक्ल की अद्‌भुत देन यह है कि उन्होंने अपने निबन्धों में मनोविज्ञान का चित्रण कर उसे साधारण पाठक तक पहुँचाया है।

उनका देहावसान छप्पन वर्ष की आयु में सन् 1940 में हुआ। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं-

Scanned with CamScanner

आलोचनात्मक ग्रन्थ– हिन्दी साहित्य का इतिहास, रस मीमांसा, सूरदास, गोस्वामी तुलसीदास, त्रिवेणी।

संपादित ग्रन्थ– जायसी ग्रंथावली, भ्रमर गीत सार, तुलसी ग्रंथावली, कुछ संग्रह।

अनुवाद– लाइट ऑफ एशिया का ब्रजभाषा में बुद्धचरित शीर्षक से अनुवाद, बंगला उपन्यास शशांक का हिन्दी अनुवाद प्रमुख है।

निबंध– चिंतामणि भाग 1, 2, 3

शुक्ल जी के निबंधों में विचारों की मौलिकता तथा भावों की गंभीरता को प्राय: देखा जा सकता है।

Ans-1 पाठ सारांश

शुक्ल जी के निबन्धों में विचारों की मौलिकता तथा भावों की गंभीरता है। इनके निबन्ध मनोविकार सम्बन्धी हैं। मनोवैज्ञानिक विषयों में अनुभव की गहराई एक चिंतन की व्यापकता है। उत्साह में कष्ट या दर्शन सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्त होने का आनन्द का योग रहता है। साहसपूर्ण आनन्द की उमंग का नाम ही उत्साह है। कर्म सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं। उत्साह में उत्कट आनन्द होती है। कष्ट सहने में साहस होती है। इस निबन्ध में शुक्ल जी ने कई उदाहरण देकर सिद्ध किया है कि उत्साह मनुष्य को उत्कृष्ट रूप है। इसमें कष्ट सहने की गुँजाइश नहीं। उत्साह की अभिव्यक्ति द्वन्द्व व्यापार के अवसर पर होती तो अन्य का बुद्धि द्वारा निश्चित उद्योग में तत्पर होने की दशा में, हमारे देखने में उद्योग की तथा अभिव्यक्ति होता है। अत: कर्मवीर ही सच्चे उत्साही होते हैं। निबन्ध की भाषा सरल है।

उत्साह

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

Ans-2

दुःख के वर्ग में जो स्थान भय का है, वही स्थान आनन्द वर्ग में उत्साह का भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दुखी और कभी-क उस स्थिति में अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान भी होते हैं। उत्साह में आनेवाली कठिन स्थिति के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्ति होने के आनन्द का योग रहता है। साहस-पूर्ण की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म-सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहल

जिन कर्मों में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित उन सबके प्रति उत्कण्ठापूर्ण आनन्द उत्साह के अन्तर्गत लिया जाता है। कष्ट के भेद के अनुसार उत्साह के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य मीमांसकों ने से युद्ध-वीर, दान-वीर, दया वीर, इत्यादि भेद किए हैं। इनमें सबसे प्राचीन युद्ध वीरता है, जिसमें आघात, पीड़ा और मृत्यु की परवा नहीं रहती। इस वीरता का प्रयोजन अत्यन्त प्राचीन काल से चलता चला आ रहा है जिसमें प्रयत्न दोनों चरम उत्कर्ष पर पहुँचते हैं। पर केवल कष्ट या पीड़ा सहन क

Scanned with CamScanner